18

आश्चर्यकर्मों का दूसरा समूह

(8:23-9:8)

मत्ती 8:23-9:8 यीशु द्वारा किए गए तीन और आश्चर्यकर्मों को दिखाता है। इनमें तूफ़ान को शान्त करना (8:23-27), दुष्टात्माओं से पीड़ित को चंगा करना (8:28-34), और एक लकवे के रोगी को चंगा करना (9:1-8) शामिल है। ये विवरण प्रकृति, बुराई की आत्मिक शक्तियों और शारीरिक रोगों के ऊपर यीशु की सामर्थ को दर्शाते हैं। वे विश्वास और संदेह, स्वीकृति और ठुकराए जाने से मिले हुए हैं।

तूफ़ान को शान्त करना (8:23-27)

[23]जब वह नाव पर चढ़ा, तो उसके चेले उसके पीछे हो लिए। [24]और देखो, झील में एक ऐसा बड़ा तूफ़ान उठा कि नाव लहरों से ढकने लगी और वह सो रहा था। [25]तब चेलों ने पास आकर उसे जगाया और कहा, ''हे प्रभु, हमें बचा हम नाश हुए जाते हैं।'' [26]उसने उनसे कहा, ''हे अल्पविश्वासियो, क्यों डरते हो?'' तब उसने उठकर आंधी और पानी को डांटा, और सब शान्त हो गया। [27]और वे अचम्भा करके कहने लगे, ''यह कैसा मनुष्य है कि आंधी और पानी भी उसकी आज्ञा मानते हैं?''

दृश्य समर्पित चेलों से बदलकर (8:18-22) उन चेलों पर चला जाता है जिन्होंने विश्वास की कमी दिखाई (8:23-27)। यीशु को आमतौर पर सम्भावी वाले चेले मिलते और वर्तमान चेलों से निराशा मिलती।

आयत 23. अन्धेरा हो रहा था, जब यीशु अन्त में झील के दूसरी ओर जाने के लिए **नाव पर** चढ़ा। बारहों में से कुछ चेले उसके साथ नाव में थे। अन्य **चेले** अलग नावों में **उसके पीछे हो लिए** (मरकुस 4:36)।

आयत 24. यीशु और उसके चेलों के नाव में बैठकर जाने पर **झील में एक ऐसा बड़ा तूफ़ान उठा**। गलील की झील के बारे में रॉबर्ट एच. माउंस ने लिखा है:

> आड़ू के आकार की यह झील (आठ मील चौड़ी और उत्तर से दक्षिण तक तेरह मील) समुद्र तल से 680 फुट नीचे है। इसके आस पास की ऊंची पहाड़ियां गहरे दर्रों के साथ कटी हुई हैं जो ऊंचाई पर से इस झील में बिना चेतावनी के तेज़ आंधियां लाने की बड़ी चिमनियों का काम करती हैं।[1]

पहाड़ियों के ऊपर बहती शीत हवाएं जब गलील के पानी की गर्म हवाओं से टकराती, तो गलील की झील के पानी पर तूफ़ान जैसा लगता। इस खतरनाक मौसम के मिज़ाज से पता चलता है

कि इस आयत में इस्तेमाल यूनानी शब्द (*seismos*) का अनुवाद ''तूफ़ान'' क्यों किया गया है; आम तौर पर इस शब्द को ''भूकम्प'' कहा जाता है (24:7; 27:54; 28:2; प्रेरितों 16:26; प्रकाशितवाक्य 6:12; 8:5; 11:13, 19; 16:18)। यह तूफ़ान अचानक उग्रता से आ सकते हैं (देखें 14:24)।

मछलियां पकड़ने वाली छोटी **नाव** (*ploion*) **लहरों से ढकने लगी**। मरकुस ने लिखा है कि ''लहरें नाव पर यहां तक लगीं, कि वह अब पानी से भरी जाती थी'' (मरकुस 4:37)। लहरें नाव को भर रही थीं पर **यीशु सो रहा था**। न तो तेज़ आंधी और न तूफ़ानी लहरों से प्रभु की नींद खुली। पवित्र शास्त्र में, गहरी नींद परमेश्वर पर भरोसा रखने का संकेत है (अय्यूब 11:18, 19; भजन संहिता 3:5; 4:8; 127:2; नीतिवचन 3:24-26; प्रेरितों 12:6, 7)।

आयत 25. यीशु के उलट, जो बड़ी शान्ति से सो रहा था, उसके साथ चेले अपने आप में डरे हुए थे। **तब चेलों ने पास आकर उसे जगाया और कहा, ''हे प्रभु, हमें बचा हम नाश हुए जाते हैं।''** एक और समय पर, जब पतरस पानी के ऊपर चल रहा था और डूबने लगा तो उसने तब भी पुकारा था, ''हे प्रभु, मुझे बचा!'' (14:30)।

आयत 26. यीशु ने उठकर उन्हें यह कहते हुए डांटा, **''हे अल्पविश्वासियो क्यों डरते हो?''** ''डरते'' के लिए यूनानी शब्द (*deilos*) का अर्थ है ''डरपोक,'' ''कायर,'' या ''भयभीत।'' यीशु ने कहा कि ये चेले ''अल्पविश्वासी'' (*oligopistos*) थे। यूनानी शब्द केवल मत्ती और लूका में ही मिलता है और इसका इस्तेमाल यीशु द्वारा केवल अपने चेलों के विवरण के लिए किया गया है (6:30 पर टिप्पणियां देखें)। यदि उन्होंने यीशु को सृष्टि के परमेश्वर का पुत्र सचमुच मान लिया था, जो वह था, तो उन्हें यह समझ आ गई होनी चाहिए थी कि वह सब कुछ अपने वश में कर सकता है। क्या इन चेलों को समझ नहीं थी कि यीशु की उपस्थिति का अर्थ था कि वे सुरक्षित हैं? क्या उन्हें मालूम नहीं था कि प्रकृति परमेश्वर के उद्देश्य को ठुकरा नहीं सकती? यीशु ने ''उन्हें अपनी प्रार्थनाओं से उसे परेशान करने के लिए'' नहीं, ''बल्कि उन्हें अपने भय से परेशान होने के लिए डांटा।''[2] इस अध्याय में उनके ''अल्पविश्वास'' और उस सूबेदार के जिसके सेवक को चंगा किया गया था ''बड़े विश्वास'' में अन्तर ध्यान देने योग्य है (8:10)।

यीशु ने नाव में खड़े होकर **''आंधी और पानी को डांटा और सब शांत हो गए।''** ''डांटा'' (*epitimaō*) शब्द आम तौर पर एक व्यक्ति द्वारा दूसरे को सुधारने या चेतावनी देने का संकेत देता है। परन्तु आश्चर्यकर्मों के इन विवरणों में इसका इस्तेमाल कई बार यह संकेत देने के लिए है कि यीशु ने शत्रु सेनाओं को खत्म कर दिया है। उसने तूफ़ान को ही नहीं ''डांटा'' बल्कि उसने ज्वर (लूका 4:39) और दुष्टात्मा (लूका 9:42) को भी ''डांटा।''

मरकुस ने लिखा कि यीशु ने कहा, ''शांत रह, थम जा'' (मरकुस 4:39)। ''थम जा'' की आज्ञा यूनानी शब्द (*phimoō*) से मिली है। इसका अनुवाद इस अर्थ में कि किसी जानवर का मुंह बांधा जाए, ''मुंह बांधना'' भी हो सकता है, (1 तीमुथियुस 5:18)। तूफ़ान एकदम थम गया। डी. ए. कार्सन ने लिखा है:

> ... यीशु में राजा का अधिकार और सेवक का मन दोनों मिले हुए थे। ... यीशु अपनी

सेवकाई के परिश्रम से थका हुआ, नाव में सो गया है; पर वह प्रकृति का प्रभु फिर भी है, अपने वचन के द्वारा तुफान का मुंह बन्द करके, स्वयं परमेश्वर के अधिकार का इस्तेमाल करके जो समुद्रों को वश में करता और शान्त करता है।[3]

आयत 27. यीशु के आश्चर्यकर्म के कारण चेले **अचम्भित** हो गए। ''अचम्भा'' के लिए यूनानी शब्द (*thaumazō*) का अनुवाद अत्यन्त हैरानी का संकेत देते हुए ''अचम्भा'' भी हुआ है (8:10)। हैरान होने के अलावा वे ''बहुत डर गए'' (मरकुस 4:41)। वे तूफ़ान से अधिक यीशु की सामर्थ से डर गए थे। उन्होंने अब तक उसके कई आश्चर्यकर्म देखे, पर हैरान रह गए कि वह तो प्रकृति की शक्तियों को भी वश कर सकता है। उन्होंने पूछा कि **''यह कैसा मनुष्य है कि आंधी और पानी भी उसकी आज्ञा मानते हैं?''** आखिर, समुद्र की लहरों को काबू करने वाला सर्वशक्तिमान केवल परमेश्वर ही तो है (अय्यूब 38:8-11; भजन संहिता 89:8, 9; 93:3, 4; 104:5-9; 106:9-12; 107:23-29)।

दुष्ट आत्मा से ग्रस्त दो लोगों की चंगाई (8:28-34)

[28]जब वह उस पार गदरेनियों के देश में पहुंचा, तो दो मनुष्य जिनमें दुष्टात्माएं थीं कब्रों से निकलते हुए उसे मिले। वे इतने प्रचण्ड थे, कि कोई उस मार्ग से जा नहीं सकता था। [29]उन्होंने चिल्लाकर कहा, ''हे परमेश्वर के पुत्र, हमारा तुझसे क्या काम? क्या तू समय से पहिले हमें दुःख देने यहां आया है?'' [30]उनसे कुछ दूर बहुत से सूअरों का एक झुण्ड चर रहा था। [31]दुष्टात्माओं ने उससे यह कहकर बिनती की, ''यदि तू हमें निकालता है, तो सूअरों के झुण्ड में भेज दे।'' [32]उसने उनसे कहा, ''जाओ।'' और वे निकलकर सूअरों में बैठ गईं। और देखो, सारा झुण्ड कड़ाडे पर से झपटकर पानी में जा पड़ा, और डूब मरा। [33]उनके चरवाहे भागे, और नगर में जाकर ये सब बातें और जिनमें दुष्टात्माएं थीं उनका सारा हाल कह सुनाया। [34]तब सारे नगर के लोग यीशु से भेंट करने को निकल आए, और उसे देखकर बिनती की कि हमारी सीमा से बाहर निकल जा।

आयत 28. भीड़ से दूर यीशु का थोड़ी देर का समय आरामदायक नहीं था। गलील की झील पर तूफ़ान को शांत करने के बाद वह अपने चेलों के साथ **उस पार** पहुंचा और तुरन्त एक और नाटकीय सामना करना पड़ा (8:18 पर टिप्पणियां देखें)।

तट पर वह स्थान जहां पर यीशु आया था **गदरेनियों का देश** था जबकि मरकुस और लूका ने इसे ''गिरासेनियों के देश'' कहा (मरकुस 5:1; लूका 8:26)। लुईस ने टिप्पणी की है, ''हस्तलिपियों से कफ़रनहूम से दूसरी ओर के तट पर-जहां यीशु अभी-अभी गया, स्थिति के नाम पर अनिश्चितता लगती है।''[4] प्राचीन यूनानी हस्तलिपियों में पाए जाने वाले तीन नाम हैं ''गिरासेनियों,'' ''गदरेनियों'' और ''गिरगेसेनियों।''[5] ये नाम तीन गिरासा, गदारा, और गिरगेसा के अलग-अलग स्थानों का संकेत देते हैं।

(1) गिरासा जिसे आज ''जिराश'' कहा जाता है, दिकापुलिस का एक नगर था। यह गलील की झील के दक्षिण-दक्षिण पूर्व से पैंतीस मील था और शायद वचन में दिए गए विवरण से मेल नहीं खाता होगा।

(2) गिदारा, दिकापुलिस का एक और नगर, गलील की झील से लगभग पांच मील उत्तर पूर्व में था। इसे यरमुक नदी के दक्षिण में उम-क्वेस के नाम से पहचाना गया है। इसका इलाका सम्भवतया झील तक जाता था, जो मत्ती की अभिव्यक्ति कि ''गदरेनियों के देश'' से मेल खाता था। इस विचार को जोसेफस के ''गदारा गांव ... जो ... तिबरियास [की झील] की सीमाओं पर थे'' के हवाले से समर्थन मिलता है। इस विकल्प की सबसे अधिक सम्भावना है।

(3) गिरगेसा झील के पूर्वी तट पर बसा नगर था। बहुत से लोग इसे पूर्वी तट के केन्द्र के थोड़ा ऊपर आधुनिक कर्सी से मिलाते हैं।[6] 1970 के दशक में की गई खुदाइयों में, पांचवीं शताब्दी के बेसिलका के साथ जो इस आश्चर्यकर्म को स्मरण रखने के लिए बनाया गया था, पांचवीं शताब्दी का एक गांव मिला था।[7]

मत्ती का विवरण जहां यह कहता है कि यीशु को इस इलाके में दुष्टात्माओं से ग्रस्त **दो मनुष्य** मिले, वहीं मरकुस और लूका केवल एक ही आदमी की बात करते हैं (मरकुस 5:2; लूका 8:27)। सुसमाचार के इन विवरणों में कोई भी यह स्पष्ट नहीं कहता कि केवल एक ही आदमी था, परन्तु वे दुष्टात्माओं की सेना से ग्रस्त एक आदमी पर फोकस करते हैं और स्पष्टतया उसी की बात करते हैं। इसी प्रकार से मत्ती 20:30-34 यीशु के यरीहो के निकट दो अन्धों को चंगाई देने के बारे में बताता है जबकि मरकुस और लूका केवल एक की बात करते हैं (मरकुस 10:46-52; लूका 18:35-43)। इन अन्तरों में शायद सिवाय इसके कि मरकुस और लूका ने अधिक नाटकीय सामने की बात लिखी है, कोई विशेष महत्व नहीं जोड़ा गया। आश्चर्य की बात नहीं है कि कोई दुष्टात्मा से ग्रस्त ऐसे व्यक्ति पर ध्यान दे जो सबसे मुखर हो।

ये दो आदमी **जिनमें दुष्टात्माएं** थीं, अर्थात जो दुष्टात्माओं के वश में थे। पुराने नियम में दुष्टात्मा से ग्रस्त होने की ऐसी घटनाएं, यदि कहीं होती भी हों, तो बहुत कम होती थीं। इसमें संदेह है कि दुष्टात्माओं ने इन लोगों को जिनकी बात की गई है सचमुच ''ग्रस्त'' किया हो (देखें न्यायियों 9:23; 1 शमूएल 16:14-23)। नये नियम में सुसमाचार की पुस्तकों के बाद केवल कुछ उदाहरण हैं (प्रेरितों 5:16; 8:7; 16:16-18; 19:11-16)। निश्चय ही, मौरिस इस बात से सहमत है कि यह सच है कि ''बाइबल में दुष्टात्मा से ग्रस्त होना यीशु के देहधारी होने के समय में उसका विरोध करने वाली बुराई का एक भाग है।''[8]

दुष्टात्माओं से ग्रस्त लोग समाज के निकाले हुए होने के कारण **कब्रों** में रहते थे जो ''मुर्दों की हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से भरी'' रहती हैं (23:27)। वे **बहुत प्रचण्ड** होते थे और यही बात किसी के लिए भी उस इलाके **से** निकलना असम्भव बना देती थी। नगर के लोगों ने उन्हें अलग कर दिया होता था और उनके हिंसक आवेश और कामों को काबू में रखने के लिए वे उनसे दूर रहते थे, पर कोई लाभ नहीं होता था (मरकुस 5:3, 4; लूका 8:29)। इनमें से कम से कम एक आदमी ''लगातार रात-दिन कब्रों और पहाड़ों में चिल्लाता और अपने को पत्थरों से घायल करता था'' (मरकुस 5:5)। मरकुस ने लिखा कि यह बेचारा दुष्टात्माओं की पूरी सेना से पीड़ित था। जब यीशु ने उसका नाम पूछा, तो जवाब मिला, ''मेरा नाम सेना है; क्योंकि हम बहुत हैं'' (मरकुस 5:9)। एक रोमी सेना में छह हज़ार पुरुष होते थे, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि उस आदमी में छह हज़ार दुष्टात्माएं थीं। ''सेना'' शब्द का अर्थ बहुत बड़ीं संख्या या बहुत बड़ी सेना था।

आयत 29. यीशु को देखकर वह आदमी ''दौड़ा और उसे प्रणाम किया'' (मरकुस 5:6)। ''प्रणाम किया'' के लिए इस्तेमाल किए गए यूनानी शब्द (*proskuneō*) का अनुवाद ''आराधना'' भी हो सकता है, क्योंकि झुकना श्रद्धांजलि या भक्ति दिखाने की आम अभिव्यक्ति थी (2:2 पर टिप्पणियां देखें)। इस मामले में, अधीन होने का काम दुष्टात्माओं का था न कि उस आदमी द्वारा किया गया समपर्ण।

दोनों आदमियों के बीच की दुष्टात्माएं पुकार उठीं, ''**... हमारा तुझ से क्या काम?**'' वे अकेले रहना चाहती थीं; वे यीशु से कोई वास्ता नहीं रखना चाहती थीं। ऐसे ही प्रश्न पवित्र शास्त्र में और कहीं मिलते हैं (न्यायियों 11:12; 2 शमूएल 16:10; 19:22; 1 राजाओं 17:18; 2 राजाओं 3:13; 2 इतिहास 35:21; मरकुस 1:24; यूहन्ना 2:4)।

सुसमाचार के तीनों सहदर्शी वृत्तांतों में लिखा है कि दुष्टात्मा परमेश्वर और **परमेश्वर के पुत्र** के रूप में यीशु में विश्वास रखती थीं (8:29; मरकुस 5:7; लूका 8:28)। यह विवरण याकूब की बात से मेल खाता है कि ''दुष्टात्मा भी विश्वास रखते, और थरथराते हैं'' (याकूब 2:19)। न केवल दुष्टात्मा यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानते थे, बल्कि उन्होंने उसे परमेश्वर का पवित्र जन होना अंगीकार भी किया (देखें मरकुस 1:24; 3:11; लूका 4:41)।

दुष्टात्माओं ने यीशु से पूछा, ''**क्या तू समय से पहले हमें दुख देने आया है?**'' वे जानते थे कि भविष्य में किसी समय पर उन्हें सताव की जगह भेज दिया जाएगा (देखें 25:41)।

उन्होंने यीशु से उन्हें ''अथाह गड्हे में'' (लूका 8:31) न भेजने की विनती की (देखें 2 पतरस 2:4; यहूदा 6)। ''अथाह गड्हा'' के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''abyss'' यूनानी भाषा के शब्द (*abussos*) का लिप्यांतरण है, जिसका अर्थ है ''नापी न जा सकने वाली गहराई।'' इसका इस्तेमाल उस स्थान के लिए किया जाता है, जहां दुष्टात्माएं अन्तिम न्याय तक के लिए बन्द हैं (देखें 2:4; यहूदा 6)। KJV में आम तौर पर इस शब्द का अनुवाद ''अथाह गड्हा'' ही किया गया है। प्रकाशितवाक्य में अथाह गड़हे को गहरा, धुएं की मोटी चादर और भयंकर जीवों से अन्धकार भरा कुआं है। इसे ज़ंजीर से बांधा और तालाबन्द किया गया है। परमेश्वर के एक स्वर्गदूत को इसमें आने वाले और जाने वालों पर नियन्त्रण रखने के लिए कुंजी सौंपी गई है (प्रकाशितवाक्य 9:1, 2, 11; 11:7; 17:8; 20:1, 3)। दुष्टात्माओं को डर था कि यीशु ठहराए हुए समय से पहले दण्ड देकर अथाह कुण्ड में डाल रहा है।

आयत 30. यीशु से और दुष्टात्माओं से ग्रस्त आदमियों से थोड़ी **दूर बहुत से सूअरों का एक झुण्ड चर रहा था**। यह ''कोई दो हज़ार'' के लगभग थे (मरकुस 5:13)। इस इलाके में कुछ आबादी अन्यजातियों (अश्शूरियों) की थी[9] जो सूअर पालने के लिए यहूदियों से कहीं अधिक प्रवृति रखते होंगे (7:6 पर टिप्पणियां देखें)। रब्बियों की एक परम्परा कहती है कि इस्राएल देश में यहूदी लोग ''कहीं पर भी सूअर न पालें।''[10]

आयतें 31, 32. दुष्टात्माओं ने यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में पहचाना ही नहीं (8:29), उन्हें यह मालूम भी था कि उसके पास उन्हें निकालने की सामर्थ है। उन्होंने यीशु से विनती की ''**यदि तू हमें निकालता है, तो सूअरों के झुण्ड में भेज दे**।'' डोनल्ड ए. हेग्नर ने एक उपयोगी चेतावनी दी है:

यहां पाठक बिना शक के वचन के उन प्रश्नों में आ जाता है जिससे टीकाकार उत्तर देने के लिए सही तरह से तैयार नहीं हैं, जैसे कि दुष्टात्माओं से यह विनती क्यों की (आयत 31)? यीशु ने उनकी विनती क्यों मानी (आयत 32)? और सूअरों के झुण्ड के डूब जाने पर दुष्टात्माओं का क्या हुआ (आयत 32)? दुष्टात्माओं के मानसिक और अलौकिक संसार के ज्ञान के बिना इन और अन्य ऐसे प्रश्नों का अनुमान लगाना केवल सहारा लेना है।[11]

दुष्टात्माओं की सूअरों में जाने की विनती सम्भवतया अथाह कुण्ड से बचने का प्रयास थी। सूअरों में जाना उस कैद से बेहतर था! मत्ती 12:43-45 भी यही संकेत देता लगता है कि अशुद्ध आत्माओं को तब तक कोई चैन नहीं मिल सकता था, जब तक उन्हें रहने को कोई शरीर न मिले। परन्तु भोली लगने वाली विनती में दुष्टता की भूख लग सकती है। क्या सूअरों में जाने के लिए कहने से पहले उनकी कोई विनाशकारी इच्छा थी? क्या उनकी इच्छा यह जानते हुए कि ऐसा कार्य करने से लोग यीशु के विरुद्ध जो जाएंगे, सूअरों के इस बड़े झुण्ड को नष्ट करने की हो सकती है? उनकी यह मंशा थी या नहीं, पर निश्चित रूप से हुआ यही।

प्रभु की सीधी सी एक शब्द की आज्ञा ''जाओ'' से दुष्टात्मा **सूअरों में** चले गए। प्रतिक्रिया नाटकीय थी क्योंकि पागल हुए सूअर बेकाबू होकर **पानी में जा पड़े और डूब मरे**। बाद में दुष्टात्माओं का क्या हुआ, हम नहीं जानते। हम इतना पक्का कह सकते हैं कि वे दुष्ट आत्मिक जीव थे इस कारण वे डूबकर नष्ट नहीं हुए होंगे। यदि उन्हें मालूम था कि वे इस प्रकार से नष्ट हो सकते हैं, तो वे झील में सूअरों को न ले जाते। दुष्टात्मा स्वभाव से विनाशकारी चाहे थी, पर वे स्वविनाशकारी नहीं।

आयत 33. चरवाहे स्पष्टतया मालिक नहीं थे बल्कि मालिकों के लिए इस बड़े झुण्ड को चराने की जिम्मेदारी देने के लिए दिहाड़ी पर काम करने वाले थे। यह इलाका अन्यजातियों का था। इस कारण सूअर आम तौर पर धनवान अन्यजातियों के होते होंगे जो दूसरे लोगों को उनकी देखभाल के लिए मज़दूरी देकर लगाते थे।

बेशक जो कुछ हुआ था उससे आतंकित होकर **चरवाहों ने नगर में जाकर ये सब बातें** और बताईं। निश्चय ही वे अभी अभी नष्ट हुए सूअरों के बड़े झुण्ड की आर्थिक जिम्मेदारी नहीं लेना चाहते थे। चरवाहों ने लोगों को **जिनमें दुष्टात्माएं थी उनका सारा हाल** भी बता दिया।

आयत 34. चरवाहों की बातें सुनकर हलचल मच गई और **सारे नगर के लोग यीशु से भेंट करने को निकल आए**। उसे पाकर लोगों ने क्या देखा? उस आदमी को जिस पर सबका ध्यान था-बेशक दूसरा भी उसके साथ था-''कपड़े पहने और सचेत बैठे'' देखा (मरकुस 5:15)। यीशु ने जैसे तूफ़ान को शांत किया था (8:26) वैसे ही उसने इन दो हिंसक आदमियों के जीवनों को शांत कर दिया था।

लोगों ने यीशु के पास आने के बाद स्वयं **उससे विनती की कि हमारी सीमा से बाहर निकल जा**। एक ओर जहां कुछ लोगों का मानना है कि लोग सूअरों की हानि से परेशान हो गए थे, वहीं मरकुस का विवरण उनकी चिन्ता के एक और कारण का संकेत देता है कि वे यीशु की अत्यन्त सामर्थ से ''डर गए'' थे (मरकुस 5:15)। पूर्व दुष्टात्माओं से ग्रस्त लोगों को देखकर

चरवाहों और झील में तैरती सूअरों की लाशों को देखकर भी गवाही को मानने को विवश थे ।

मरकुस ने यह भी लिखा कि अभी अभी स्वस्थ होने वाले आदमी ने यीशु से पूछा कि क्या वह ''उसके साथ'' रह सकता है (मरकुस 5:18)। प्रभु ने उत्तर दिया, ''अपने घर जाकर अपने लोगों को बता कि तुझ पर दया करके प्रभु ने तेरे लिए कैसे बड़े काम किए हैं'' (मरकुस 5:19)। जिस कारण वह आदमी ''जाकर दिकपुलिस में इस बात का प्रचार करने लगा, कि यीशु ने मेरे लिए कैसे काम किए; और सब अचम्भा करते थे'' (मरकुस 5:20)।

लकवे के रोगी की चंगाई (9:1-8)

विवरण नगर के एक कमरे में आ जाता है, जहां यीशु ने लकवे के एक रोगी को चंगाई देकर उसके पाप क्षमा किए। यहूदी अगुओं ने चाहे यीशु पर परमेश्वर की निन्दा का दोष लगाया, पर लोग उसके अद्‌भुत कामों पर चकित होते और परमेश्वर को महिमा देते थे।

[1]फिर वह नाव पर चढ़कर पार गया, और अपने नगर में आया।
[2]और देखो, कई लोग लकवा के एक रोगी को खाट पर रखकर उसके पास लाए। यीशु ने उनका विश्वास देखकर, उस लकवे के रोगी से कहा, ''हे पुत्र ढाढ़स बांध; तेरे पाप क्षमा हुए।'' [3]इस पर, कई शास्त्रियों ने सोचा, ''यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है।'' [4]यीशु ने उनके मन की बातें जानकर कहा, तुम लोग अपने-अपने मन में बुरा विचार क्यों कर रहे हो? [5]सहज क्या है? यह कहना, ''तेरे पाप क्षमा हुए; या यह कहना 'उठ और चल फिर।' [6]परन्तु यह इसलिए कि तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है।'' उसने लकवा के रोगी से कहा, ''उठ, अपनी खाट उठा, और अपने घर चला जा।'' [7]वह उठकर अपने घर चला गया। [8]लोग यह देखकर डर गए और परमेश्वर की महिमा करने लगे जिसने मनुष्यों को ऐसा अधिकार दिया है।

आयत 1. अदभुत आश्चर्यकर्म के बावजूद जो उसने गदारा में किया था, पूरा नगर यीशु से उस इलाके से चले जाने को कहने लगा। उनकी बात मानते हुए वह एक छोटी **नाव पर चढ़कर पार गया**। ''नाव'' और ''झील'' के पार जाने के ऐसे ही हवाले पिछले अध्याय में मिलते हैं (8:18, 23, 28) जो संकेत देते हैं कि यीशु झील के निकट बसे नगरों में आता जाता रहता था।

यीशु झील के पूर्व की ओर से जो मुख्यतया अन्यजाति बहुल था, पश्चिम की ओर लौट गया जो मुख्यतया यहूदी बहुल इलाका था। जिस समय वह **अपने नगर में आया** जो गलील की झील के उत्तर-पश्चिमी तट पर स्थित कफ़रनहूम को कहा गया है (4:13 पर टिप्पणियां देखें)। पहले की तरह इस बार भी वह पतरस और उसके परिवार के साथ रहा होगा (8:5, 14; मरकुस 1:21, 29; 2:1)।

आयत 2. पहले यीशु ने कफरनहूम से जाते समय, भीड़ के दबाव के कारण और शायद शारीरिक थकावट के कारण ऐसा किया होगा (8:18; देखें मरकुस 1:35-38; लूका 5:15, 16)। परन्तु वह ''अपने नगर में'' लौटा आया। उसके आने की खबर आग की तरह फैल गई। एक बार फिर उसके पास चंगाई के लिए बीमारों को लाते हुए भीड़ उसके इर्द-गिर्द जमा हो गई; और परमेश्वर की बड़ी करुणा दिखाते हुए, उसने उन पर अनुग्रह किया (9:8; मरकुस 2:1,

2; लूका 5:15)।

मत्ती हमें **लकवे के रोगी** को जो **खाट पर** था चंगाई देने को इतना विस्तार से नहीं बताता, जितना विस्तार से दो अन्य सहदर्शी वृत्तांत बताते हैं (मरकुस 2:1-12; लूका 5:17-26)। स्पष्टतया उसके लकवे का रोग इतना भयंकर था कि वह वहां तक जहां यीशु था, अपने आप नहीं जा सकता था।

जब इस आदमी को चार मित्र या परिवार के लोग **उसके पास लाए** तो मत्ती और लूका ने कहा कि वे बहुत भीड़ होने के कारण यीशु के पास नहीं जा सकते थे (मरकुस 2:4, 5; लूका 5:19)। चतुराई से वे छत पर चले गए, जो चौरस होगी और उन्होंने छत के टुकड़े निकालते हुए उसे खोल लिया। आदमी को यीशु तक पहुंचाने की युक्ति निकालने के बाद उन्होंने उसे छत के बीच में उस स्थान पर लटका दिया जहां यीशु बैठा था (मरकुस 2:3, 4; लूका 5:18, 19)।

उन चारों के और उनके पीड़ित मित्र **विश्वास** से प्रभावित होकर यीशु के मुंह से उस आदमी को शब्द थे "**हे पुत्र, ढाढ़स बांध**।" "ढाढ़स बांध" के लिए यहां इस्तेमाल हुआ यूनानी शब्द (*tharseō*) ऐसी सोच का संकेत देता है जो डर को निकाल दे। प्रभु उससे कह रहा था, "मत डर।" **लकवे के रोगी** के पास निश्चित रूप से डरने का कारण था: उसके स्वास्थ्य की बिगड़ती स्थिति, उसके मित्रों द्वारा उसके साथ किए जाने वाले काम पर इस बड़ी भीड़ की प्रतिक्रिया और सबसे बढ़कर, उसके सामने होना जिसमें ऐसी सामर्थ है।

"हे पुत्र" के लिए शब्द (*teknon*) का अनुवाद "बच्चा" (NJB) हो सकता है। CEV में इसका अनुवाद "मित्र" है। इसका इस्तेमाल किसी भी उम्र या लिंग के बच्चे के लिए या किसी भी व्यक्ति के लिए जिसके कोई निकट हो, या व्यक्तिगत सम्बन्ध हो, के लिए हो सकता है। लूका 5:18 लकवे के इस रोगी को "एक मनुष्य" कहता है जिसका कारण हो सकता है कि यीशु इस शब्द का इस्तेमाल लाड प्यार के अर्थ में कर रहा था।

इस आदमी से यीशु के अगले शब्द "**तेरे पाप क्षमा हुए**" थे। यह उन दो में से एक बार है कि यीशु ने ऐसी पुष्टि की (9:2; लूका 7:48; देखें लूका 23:43)।

यीशु ने अपने समय की इस प्रसिद्ध धारणा, हर बीमारी का सम्बन्ध पाप से होता है, को खत्म करने के लिए बहुत कुछ किया था (लूका 13:1-5; यूहन्ना 9:1-3)।[12] तो फिर यीशु ने इस आदमी को यह शब्द क्यों कहे? शायद यीशु ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि पाप की समस्या से पहले निपटना आवश्यक था। उसके सुनने वाले उस मौखिक शिक्षा से परिचित होंगे जो बाद में टालमुड में लिखी गई: "बीमार आदमी तब तक अपनी बीमारी से ठीक नहीं होता जब तक उसके सारे पाप क्षमा नहीं हो जाते।"[13] एक और सम्भावना यह है कि उस आदमी की बीमारी वास्तव में पाप का सीधा परिणाम थी, जो कि कई बार हो जाता है (याकूब 5:14-16)। हो सकता है कि उस आदमी का अपना विश्वास हो कि उसे लकवे का रोग पाप के कारण लगा था। वास्तविक स्थिति जो भी हो, यीशु के शब्दों से उस आदमी को बहुत राहत मिली होगी।

आयत 3. क्षमा की प्रभु की घोषणा से तुरन्त उनकी शत्रुता बढ़ गई जो स्पष्टतया इस नये गुरु की सेवकाई को जांचने के लिए आए थे। उसकी शिक्षाओं ने लोगों में काफ़ी हलचल पैदा कर दी थी, जिस कारण यहूदी अगुवे उसकी बातें सुनने के लिए "गलील और यहूदिया के हर एक गांव से, और यरूशलेम से आए थे" (लूका 5:17)। **कई शास्त्रियों ने** जिन्होंने पहले उसके

प्रति किसी प्रकार का विरोध जताया था, कुछ फरीसियों के साथ मिलकर (लूका 5:21) यीशु पर परमेश्वर का अपमान करने का आरोप लगाया। वे अपने मनों में कह रहे थे **''यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है''** और ''परमेश्वर को छोड़ और कौन पाप क्षमा कर सकता है ?'' (मरकुस 2:7)। उन्होंनें पाप क्षमा करने को केवल परमेश्वर के विशेषाधिकार के रूप में देखा (भजन संहिता 103:12; यशायाह 1:18; 43:25; 55:6, 7; यिर्मयाह 31:34; मीका 7:18, 19)।

आयत 4. यह आयत यीशु के प्रति आधिकारिक शत्रुता का आरम्भ था। मत्ती के अनुसार, परमेश्वर की निन्दा का आरोप ऊंचे स्वर से नहीं लगाया गया था। यीशु के आरोप लगाने वाले ''मन में'' या ''अपने आप में'' कह रहे थे (9:3; KJV)। परन्तु **यीशु** उनके **मन की बातें** समझ सकता था (देखें 12:25; 22:18; लूका 9:47; यूहन्ना 1:47, 48; 2:25; 21:17)। उसने उन से पूछा, **''तुम अपने-अपने मन में बुरा विचार क्यों कर रहे हो?''** इसी प्रश्न से उसके परमेश्वर होने के उनके संदेह करने वालों को यकीन हो जाना चाहिए था। उसने न केवल उनके मन की बातों को उजागर किया, बल्कि उनके मन के विचारों की बुराई भी बता दी। ''बुरा'' शब्द ''बुरे काम करने की योजनाओं'' के लिए हो सकता है, ''परन्तु इसकी अधिक सम्भावना यीशु के लिए बुराई सोचना हो सकती है।''[14] शास्त्रियों को चाहे लगता था कि वे परमेश्वर के सम्मान की रक्षा करके भलाई कर रहे हैं पर वास्तव में वे परमेश्वर के पुत्र का विरोध करके बुराई कर रहे थे। मसीह का विरोध करने का अर्थ परमेश्वर का विरोध करना है। यीशु ने कहा, ''जो पुत्र का आदर नहीं करता, वह पिता का जिस ने उसे भेजा है, आदर नहीं करता'' (यूहन्ना 5:23)।

आयत 5. फिर यीशु ने उन्हें घुमाकर एक प्रश्न के रूप में उत्तर दिया, **''सहज क्या है? यह कहना, तेरे पाप क्षमा हुए या यह कहना उठ चल फिर?''** एक दर्जे पर यह कहना आसान था कि ''तेरे पाप क्षमा हुए'' क्योंकि देखने वालों के लिए इस बात की पुष्टि करने या इसकी वैधता से इनकार करने का कोई तरीका नहीं था। इसके विपरीत यह कहना कि ''उठ और चल फिर'' लकवे के रोगी की प्रतिक्रिया से आसानी से पता किया जा सकता है। यदि वह व्यक्ति उठ कर न चलता, तो यीशु का पता चल जाना था कि वह धोखेबाज है।

एक और स्तर पर सचमुच में यह कहना और कठिन था कि ''तेरे पाप क्षमा हुए,'' क्योंकि क्षमा देने का अधिकार केवल परमेश्वर को है। किसी के पास दूसरों को शारीरिक चंगाई देने की सामर्थ तो हो सकती थी, पर इसका अर्थ यह नहीं था कि उसे पापों की क्षमा देने का भी अधिकार है। परमेश्वर के ईश्वरीय पुत्र के रूप में यीशु ने चाहा कि उसके आलोचक इस बात को समझ लें कि उसके लिए ''तेरे पाप क्षमा हुए'' कहना ''उठ और चल फिर'' कहने की तरह ही आसान है। वह समझा रहा था कि उसके पास शारीरिक और आत्मिक दोनों प्रकार से चंगाई देने की सामर्थ है।

आयतें 6, 7. प्रभु ने प्राकृतिक संसार और आत्माओं के संसार पर अपना **अधिकार** दिखा दिया था, और अब उसमें सनातन संसार में अपने अधिकार को दिखाया (7:28, 29; 8:9 पर टिप्पणियां देखें)। स्वर्ग की ओर से हो या **पृथ्वी पर,** उसे **पाप क्षमा करने का** अधिकार था। उसका अधिकार यीशु के अपने आपसे **मनुष्य के पुत्र** कहलाने से मेल खाता है। दानिय्येल 7:13, 14 की भविष्यवाणी में, अति प्राचीन ने ''प्रभुता, महिमा और राज्य'' के साथ मनुष्य को पुत्र को दिखाया था।

पाप क्षमा करने के अपने अधिकार के प्रमाण के रूप में यीशु ने ''**लकवे के रोगी से कहा, उठ अपनी खाट उठा और अपने घर चला जा**।'' उस आदमी को यीशु के पास खाट पर लाया गया था (9:2); उसे अपनी खाट स्वयं उठाकर घर चले जाने को कहा गया था। माउंस ने व्याख्या की है, ''यीशु के समय में अधिकतर लोग फर्श पर गद्दानुमा नरम चीज़ों पर सोते थे। इसी कारण *मैट* [NIV] गुदड़ी या तख्ता जैसा कुछ होता होगा, जिसे बिना कठिनाई के उठाया जा सकता हो।''[15] बिना किसी हिचकिचाहट के उस आदमी ने यीशु की आज्ञा मानी और **अपने घर चला गया**। परिणामस्वरूप, शरीर को चंगाई देने की यीशु की योग्यता ने आत्मा को चंगाई देने की उसकी योग्यता की पुष्टि कर दी।

आयत 8. लोग हैरान रह गए जब उन्होंने उस आदमी को देखा जो सचमुच में उठकर, अपना बिस्तर लेकर, चलते हुए उस घर से निकल गया। मरकुस 2:12 कहता है कि वह ''तुरन्त खाट उठाकर और सब के साम्हने से निकलकर चला गया,'' और ''वे सब चकित हुए।'' मत्ती ने लिखा कि **वे यह देखकर डर गए**। यहां इस्तेमाल यूनानी क्रिया शब्द *phobeō* का सम्बन्ध संज्ञा शब्द *phobos* से है जिससे अंग्रेजी शब्द ''फोबिया'' निकला है। इन शब्दों का इस्तेमाल आम तौर पर चाहे ''भय'' होता है पर नये नियम में कई बार इनका इस्तेमाल ''भक्तिपूर्ण भय'' के लिए हुआ है (लूका 1:50; 18:2, 4; प्रेरितों 10:35; 13:16, 26; रोमियों 3:18; 2 कुरिन्थियों 5:11; 7:1; कुलुस्सियों 3:22; 1 पतरस 1:17; 2:17; प्रकाशितवाक्य 11:18; 14:7; 19:5)। ये निरीक्षक **परमेश्वर की महिमा करने लगे जिसने मनुष्यों को ऐसा अधिकार दिया**। यदि वे भयभीत हो गए थे तो यह मानना कठिन होगा कि वे परमेश्वर की महिमा कर रहे होंगे।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

''यीशु कौन है?'' (8:27)

यीशु तूफ़ान को शांत करने के बाद स्तब्ध चेले एक-दूसरे से पूछने लगे, ''यह कैसा मनुष्य है कि आंधी और पानी भी उसकी आज्ञा मानते हैं?'' (8:27)। मरकुस के विवरण में, उन्होंने पूछा, ''यह मनुष्य कौन है ...?'' (मरकुस 4:41; NLT)। सुसमाचार के विवरणों में यीशु के परिचय का प्रश्न सबसे महत्वपूर्ण है। परमेश्वर पिता ने यीशु का परिचय उसके बपतिस्मे और रूपांतर दोनों जगह अपने पुत्र के रूप में करवाया (3:17; 17:5)। शैतान ने यीशु को परमेश्वर का पुत्र माना, और इस तथ्य को उसने उसकी परीक्षा के आधार के रूप में इस्तेमाल किया (4:3, 6)। दुष्टात्माओं ने भी यीशु की ईश्वरीयता को माना (8:29)। परन्तु यीशु की पहचान की बात पर यहूदी लोगों में आम तौर पर बहस होती थी (16:13, 14; मरकुस 6:14-16; यूहन्ना 7:40-44)। यीशु के चेलों को भी कई बार समझ नहीं आता था कि वह वास्तव में है कौन? जब यीशु ने उनसे इस विषय पर पूछा, तो पतरस ने अच्छा अंगीकार किया: ''तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है'' (16:16)। परन्तु जी उठने के बाद भी, कुछ चेलों ने शक किया था (28:17)।

''यीशु कौन है?'' किसी के द्वारा उत्तर दिया जाने के लिए आज सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है। परमेश्वर के पुत्र यीशु ने अपना परिचय अनन्त जीवन के एकमात्र मार्ग के रूप में करवाया (यूहन्ना 14:6; देखें प्रेरितों 4:12)। उसने यह भी कहा, ''यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही

हूं, जो होने का मैं दावा करता हूं, तो तुम निश्चय अपने पापों में मरोगे'' (यूहन्ना 8:24; NIV)। अच्छा अंगीकार करना परमेश्वर के अनुग्रह को स्वीकार करने के मनुष्य के विश्वास का *भाग* है जो उद्धार तक ले जाता है (10:32, 33; प्रेरितों 8:37; रोमियों 10:9, 10; 1 तीमुथियुस 6:12)। यीशु की पहचान के प्रश्न के हमारे उत्तर देने के ढंग से हमारा अनन्त भविष्य तय होता है।

डेविड स्टिवर्ट

दुष्ट आत्मा (8:28-34)

दुष्टात्माओं के आरम्भ की व्याख्या करने के लिए कई सुझाव दिए गए हैं। कइयों का मानना है कि वे दुष्ट लोगों की आत्माएं हैं जो पृथ्वी पर बार-बार प्रकट होती रहती हैं। परन्तु किसी व्यक्ति के किसी दूसरे के शरीर में वास करने के लिए लौटने का कोई उदाहरण नहीं है। अन्यों का मानना है कि वे बुरे काम करने के लिए परमेश्वर के बनाए जीव हैं। इस विचार को नकारा जाना आवश्यक है, क्योंकि आरम्भ में परमेश्वर ने जो बनाया वह ''अच्छा'' ही था (उत्पत्ति 1:31)। शायद सबसे तर्कसंगत उत्तर यह है कि वे फैंके गए स्वर्गदूत हैं (2 पतरस 2:4; यहूदा 6) जो शैतान के नेतृत्व में काम करते हैं (12:24; 25:41; मरकुस 3:22, 23)।

दुष्टात्माओं के अध्ययन में एक निराली बात यह है कि दुष्टात्मा के पीड़ित होने की बात विशेष रूप में नये नियम में मिलती है। ''बुरी आत्मा'' जिस ने राजा शाऊल को आतंकित किया था, बात मिलती है (1 शमूएल 16:14-23)। यह जो भी था, यह नये नियम के समय के दुष्टात्मा से पीड़ित होने से नाटकीय रूप में अलग था। पुराने नियम में एक भी उदाहरण नहीं है जहां किसी दुष्ट आत्मा ने किसी के शरीर को वश में किया हो।

परमेश्वर ने पहली सदी के आश्चर्यकर्मों के युग के दौरान शैतान की सामर्थ के ऊपर अपनी सामर्थ की श्रेष्ठता को दिखाने के लिए मनुष्यों की देहों में वास करने की दुष्टात्माओं को अनुमति दी होगी। दुष्टात्माओं से पीड़ित होने की बात सुसमाचार तथा प्रेरितों के काम की पुस्तकों में भी है, पर नये नियम के बाद की पुस्तकों में इसका कोई उल्लेख नहीं है। तर्कसंगत निष्कर्ष यही है कि जब दुष्टात्माओं को निकालने की सामर्थ नहीं रही, तो उन्हें मनुष्य की देहों में वास करने की अनुमति भी नहीं दी गई।

''झाड़ फूंक'' (*exorkizō*) शब्द जिसका अर्थ ''तन्त्र-मंत्र से निकालना'' है, नये नियम में दुष्टात्माओं को निकालने के सम्बन्ध में कहीं इस्तेमाल नहीं हुआ है। यह किसी व्यक्ति में से जिसे दुष्टात्माओं से पीड़ित किया गया हो दुष्टात्माओं को निकालने के लिए बनाई गई जादू टोने की रीति को कहा गया है। आज झाड़फूंक का इस्तेमाल अज्ञानी और अनजान और भोले-भाले लोगों को उल्लू बनाने के लिए कई नीम हकीम लोगों द्वारा उनकी जेब ढीली करने के लिए किया जाता है।

कुछ लोगों का मानना है कि दुष्टात्मा आज भी लोगों के शरीरों में वास करते हैं। लिन ए. मैकमिलन ने बताया है:

> सांस्कृतिक रूप से पिछड़े देशों की समीक्षा करने वाले डिनोमिनेशनों के मिशनरियों और समाज शास्त्रियों द्वारा कई बार लोगों के दुष्टात्माओं से पीड़ित होने के मामले बताए जाते हैं। दुष्टात्माओं से पीड़ित होने की कहानियां आम तौर पर चीन, भारत, बोरनियों,

और अफ्रीका जैसे इलाकों में से मिलती हैं। सामाजिक मनोवैज्ञानिकों का अवलोकन है कि सभ्यता और शिक्षा के स्तर के बढ़ने से बुरी आत्माओं से पीड़ित होने की घटना तेज़ी से कम होती हैं तो किसी को सांस्कृतिक और शैक्षणिक रूप से इलाकों में दुष्टात्माओं से पीड़ित मामले अधिक उन्नत तकनीकी समाजों से अधिक मिलने की उम्मीद है। उन इलाकों में जहां दुष्ट आत्माओं के पीड़ित होने को माना जाता है, विभिन्न प्रकार के व्यवहार के कई रूपों के लिए यही व्याख्या दी जाती है। यह तथ्य यह साबित करने में सहायता करता है कि ''दुष्टात्माओं से पीड़ित'' होने और दुष्टात्माओं से पीड़ित होने में विश्वास के लिए सांस्कृतिक माहौल जिम्मेदार है।[16]

आज लोगों के शरीरों में दुष्टात्माओं को वास करने की अनुमति नहीं दी जाती। तौभी उनका प्रभाव संसार में बना रहता है, और इसका मुकाबला किया जाना आवश्यक है (याकूब 4:7, 8)।

उद्धार दिलाने वाला विश्वास (8:29)

दुष्टात्माओं ने साफ़ माना कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है (8:29)। उनकी बात में संदेह नहीं था। यह बाइबली प्रमाण है कि उद्धार के लिए केवल विश्वास पर्याप्त नहीं है। मृत, निष्क्रिय विश्वास हमें बचा नहीं सकता। याकूब जब ''मृत'' विश्वास कर रहा था तो उसने यही बात की: ''तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है, तू अच्छा कहता है; दुष्टात्मा भी विश्वास रखते, और थरथराते हैं'' (याकूब 2:17, 19)।

हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता (9:1-8)

कहा जाता है कि हमें लोगों को उनकी आत्मिक सेवा करने की कोशिश करने से पहले उनकी शारीरिक आवश्यकताओं का ध्यान करना चाहिए। यदि लोगों को भोजन, कपड़ा और मकान और जीवन की अन्य मूल सुविधाओं की कमी है, तो उन्हें आत्मिक मामलों पर विचार करने में कठिनाई होगी। यह माननीय अवलोकन हो सकता है, पर आम तौर पर उनकी सहायता करने की कोशिश करने पर शारीरिक तौर पर वह वहीं का वहीं रहता है। परन्तु इस कहानी में यीशु ने पहले लकवे के उस रोगी की आत्मिक आवश्यकता को देखा, उसने उसके पाप क्षमा किए। उसके बाद उसने उसका लकवा ठीक किया। परमेश्वर के साथ सम्बन्ध बहाल करने की हमारी आवश्यकता हमारी किसी भी शारीरिक आवश्यकता से बढ़कर है क्योंकि यह हमारे अनन्तकाल को स्पर्श करती है।

डेविड स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू*, न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 78. [2]मैथ्यू हैनरी, *कमैंट्री ऑन द होल बाइबल* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1960), 1243. [3]डी. एस. कार्सन, *व्हेन जीज़स कन्फ्रंट्स द वर्ल्ड: ऐन एक्सपोज़िशन ऑफ़ मैथ्यू 8–10* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1987), 50. [4]जैक पी. लुईस, द *गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू*, पार्ट 1, द लिविंग

वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 129. [5]NIV में मत्ती 8:28; मरकुस 5:1; और लूका 8:26 में अन्य दो स्थानों का नाम देते हुए प्रत्येक वचन के साथ एक टिप्पणी जोड़ी गई है। [6]जोसेफस *लाइफ* 9.42. [7]देखें वेसिलियोस ज़ाफरिस, ''ए पिल्ग्रिमेज टु द साइट आफ़ द स्वाइन मिरेकल,'' *बिब्लिकल ऑर्कियोलॉजी रिव्यू* 15 (मार्च-अप्रैल 1989): 44-51. [8]लियोन मौरिस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 208. [9]जोसेफस *वार्स* 3.3.5. [10]मिशनाह *बाबा कामा* 7.7. [11]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 1-13,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33ए (डलास: वर्ड बुक, 1993), 227. [12]देखें टालमुड *शब्बथ* 55ए; मिशनाह *सोटाह* 1.7, 8. [13]टालमुड *नेदारिम* 41ए। [14]मौरिस, 216. [15]माउंस, 82. [16]लिन ए. मैक्मिलन, *डॉक्ट्रिन ऑफ़ डीमन्स* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1975), 98.